ISSN : 2349-9273

दि गुंजन

वर्ष 2 , अंक 6

साहित्य केन्द्रित त्रैमासिक अन्तर्राष्ट्रीय शोध पत्रिका

सुपर प्रकाशन की प्रस्तुति – जनवरी, 2016

(हिन्दी ग़ज़ल विशेषांक)

सम्पादक –
डॉ. मधु खराटे

प्रधान सम्पादक –
डॉ. शिवबालक द्विवेदी

Scanned with CamScanner

RNI : APPLIED-78/JA/2014 ISSN : 2349-9273

अनुक्रम

सम्पादक मण्डल, सम्पादकीय

1- समकालीन हिन्दी ग़ज़ल की चुनौतियाँ - जहीर कुरेशी 07

2- आधुनिक हिन्दी ग़ज़ल के आईने में सामाजिक यथार्थ - डॉ. सुमन सिंह 10

3- भावना की ग़ज़लों का भाव–सौंदर्य – डॉ. मधु खराटे 13

4- हिन्दी ग़ज़ल : प्रेम की गलियों से चिंतन के द्वार तक - डॉ. विभा मेहरोत्रा 23

5- मुनव्वर राना की ग़ज़लों में चित्रित 'माँ' – डॉ. मनोज नामदेव पाटील 28

6- दुष्यन्त की ग़ज़लों में आमजन की पीड़ा की अभिव्यक्ति - डॉ. हरीतिमा कुमार 31

7- ग़ज़ल एवं ग़जलकार - एक दृष्टि - डॉ. प्रभा दीक्षित 35

8- ज्ञानप्रकाश विवेक की ग़ज़लों में व्यक्त समसामयिक चिंतन – डॉ. पूनम त्रिवेदी 39

9- कानपुर का समकालीन साहित्यिक परिदृश्य और हिन्दी के विशिष्ट ग़ज़लकार – डॉ. राकेश शुक्ल 44

10- डॉ. गिरिराज शरण अग्रवाल की ग़ज़लों में अभिव्यक्त आर्थिक बोध – प्रा. ईश्वर पद्मसिंह ठाकुर 48

11- जहीर कुरेशी की ग़ज़लों में सामाजिक बोध – डॉ. जाकीर शेख 51

12- ज्ञानप्रकाश विवेक की ग़ज़लों में मानवीय मूल्यों का विघटन – प्रा. कृष्णा पाटील 55

13- कुँअर बेचैन की ग़ज़लों में सामाजिक संवेदना – प्रा. प्रल्हाद विजयसिंह पावरा 58

14- समकालीन हिन्दी ग़ज़लों में व्यक्त विभिन्न समस्याएँ – प्रा. रविंद्र रामदास खरे 61

15- चंद्रसेन विराट की ग़ज़लों में समसामयिक चिंतन – प्रा. विजय एकनाथ सोनजे 64

16- ज्ञानप्रकाश विवेक की गज़लों में सामाजिक चिंतन – डॉ. संजय ढोडरे 69

17- हिन्दी ग़ज़ल में मूलभूत आवश्यकताओं के अभाव का चित्रण – डॉ. अविनाश कासांडे 72

Scanned with CamScanner

कुँअर बेचैन की ग़ज़लों में सामाजिक संवेदना

– प्रा. प्रल्हाद विजयसिंह पावरा
सहायक प्राध्यापक – हिन्दी विभाग,
कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय,
यावल, ता. यावल, जि. जलगाँव (महा.)

E-mail-
pralhad1283@gmail.com

डॉ. कुँअर बेचैन का जन्म 1 जुलाई 1942 में उत्तर प्रदेश के मुरादाबाद जिले के ग्राम 'उमरी' में हुआ। कुँअर बेचैन ने अपने जीवन में दुःख देखा, पीड़ा को सहा। आगे चलकर वही पीड़ा प्रेरणा का काम करने लगी। बचपन से ही जो बेचैन हो, जिसने दुःख देखा हो, भोगा हो, महसूस किया हो माँ–बाप का साया सर से छिन गया। दर–दर ठोकरे खाई, पढ़ाई की ट्यूशन पढ़ाई, हाथों से खाना बनाते थे। इन सभी बातों से उन्हें साहित्य लेखन को प्रेरणा देती रही। कुँअर बेचैन का नाम ग़ज़लकार के रूप में हिन्दी साहित्य विधा में प्रख्यात हैं। इनके आज तक ग्यारह ग़ज़ल संग्रह प्रकाशित हो चुके हं–

(1)	शामियाने काँच के	(1983),
(2)	महावर इन्तजारों का	(1983),
(3)	रस्सियाँ पानी की	(1987),
(4)	पत्थर की बाँसुरी	(1990),
(5)	दीवारों पर दस्तक	(1992),
(6)	नाव बनता हुआ कागज	(1994),
(7)	आग पर कंदील	(1995),
(8)	आँधियों में पेड़	(1996),
(9)	आठ सुरों की बाँसुरी	(1996),
(10)	आँगन की अलगनी	(1997),
(11)	तो सुबह हो	(2001)।

सामाजिक संवेदना :–

सामाजिक संवेदना शब्द बहुत व्यापक है। मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। समाज से अलग उसका कोई अस्तित्व नहीं है। आजादी के बाद सामाजिक जीवन मूल्यों में बड़ी तेजी से बदलाव आया है। गत वर्षों में देश को विभिन्न आंदोलनों और दल–बदलू सरकारों के उत्थान–पतन आदि से गुजरना पड़ा है और इस तरह हमारे जीवन मूल्य बदलते रहे हैं। सच तो यह है कि, "आज का बुद्धिजीवी दोहरी जिंदगी जी रहा है। एक और वह पश्चिमी चिन्तन से प्रभावित है तो दूसरी ओर वह अपने संस्कारों, रूढ़ियों तथा मान्यताओं से जकड़ा हुआ है। जीवन–मूल्यों में इस अस्पष्टता का ही कारण है कि जिन्दगी के सार पर आज आदमी भारी तनाव का अनुभव कर रहा है।"[1]

बेरोजगारी की समस्या, महँगाई की मार और रोटी, कपड़ा और मकान आज आम आदमी की प्रमुख समस्या रही है। इस स्थिति में यह सम्भव कैसे है कि, डॉ. कुँअर बेचैन इस समस्या से बे–खबर रह जाय। ग़ज़लकार ने सामाजिक जीवन मूल्य को अपनी लेखनी का स्पर्श देकर उसे अपनी ग़ज़ल में उतारा है।

Scanned with CamScanner

(क) आम आदमी की पीड़ा :

आधुनिक समाज में समय के परिवर्तन के साथ–साथ ग़ज़ल के रूप में भी बदलाव हुआ हैं। सामाजिक परिवेश के प्रति सजगता के कारण ग़ज़ल में नई संवेदनाओं ने जन्म लिया हैं। ग़ज़लकार आज की परिस्थिति से संतुष्ट नहीं है। इसलिए उनकी ग़ज़लों में आम आदमी की पीड़ा को अभिव्यक्त किया है। आज की वर्तमान स्थिति में आम आदमी की अवस्था बहुत ही खतरनाक है।

डॉ. कुँअर बेचैन अपनी ग़ज़ल में कहते है कि, आज आदमी, आदमी की शक्ल में साँप बन गया है अर्थात् अपने स्वार्थ के लिए विषैला हो गया है। आम आदमी कैंचुल की तरह है। स्वार्थी लोगों का स्वार्थ सिद्ध हो जाने पर वे उसे साँप की कैंचुल की तरह त्याग देते है –

"हो न हो वो आदमी की शक्ल में एक साँप था
वर्ना मुझको छोड़ क्यों जाता
वो कैंचुल की तरह।"[2]

आम आदमी की पीड़ा, तकलीफ और दर्द व्यथा को कोई नहीं समझता उनके आँसू पोछने के लिए उनकी व्यथा, पीड़ा, दुःख, दर्द, तकलीफ को समझने के लिए कोई नहीं सामने आता। कभी किसी ने आम इन्सान की तरफ ध्यान नहीं दिया। गरीब के लिए कोई अपने मुँह सांत्वना भरे दो शब्द नहीं कहता, सच्चे मन से इनकी तकलीफों को कोई समझ नहीं पाता सब, ऊपरी तौर पर दिखावा करते है। समसामयिक युग में आम आदमी का दर्द नहीं समझता–

"निकलकर दिल से करती थी
जो एक–इक लब्ज को रोष
इधर वो रौशनाई
देखने में ही नहीं आती ।"[3]

हम कह सकते हैं कि बेचैन ग़ज़लों में कई चित्र अत्यन्त प्रामाणिकता के साथ अभिव्यक्त हुए हैं।

(ख) रोटी, कपड़ा और मकान :

आधुनिक सामाजिक जीवन में आम आदमी की प्रमुख तीन प्राथमिक आवश्यकताएँ इस तरह है रोटी, कपडा और मकान। जिसके बिना जीवन–यापन करना असम्भव है। किन्तु समाज के बहुसंख्यक वर्ग को ये तीनों आज के वर्तमान युग में सहज सुलभ नहीं है। लोग भूखे हैं, नंगे है। रोटी, कपड़ा और मकान बहुत से लोगों के नसीब में नहीं। डॉ. कुँअर बेचैन कहते हैं कि आप लोग मेरी बात का बुरा मत मानना कि भूख तो भूख होती है। भूख में पीड़ा और वेदना होती है। भूख पर जुल्फों के सुगन्ध का असर नहीं होता। इसका कारण बताते हुए डॉ. कुँअर बेचैन कहते हैं –

"आप मेरी बात का, देखो बुरा तम मानना,
भूख में होता नहीं है, जुल्फ के खम का असर।"[4]

इस विश्व में मनुष्य सर्वश्रेष्ठ प्राणी हैं। इसका कारण यह है कि उसे भूख लगती है, भूख लगना जीवन्तता का एकमात्र लक्षण है। परन्तु आज मनुष्य को रोटी नसीब नहीं है। ग़ज़लकार यह कहते हैं कि इस संसार में कई प्रकार की खुशबू है। मगर तमाम खुशबुओं में भूखे को सिंकती हुई रोटी की खुषबू हजारों खुशबुओं में सर्वश्रेष्ठ है। डॉ. कुँअर बेचैन जीवन में रोटी की महत्ता प्रतिपादित करते हुए कहते हैं कि–

"हजारों खुशबुएँ दुनिया में हैं,
पर उससे कमतर हैं,
जो भूखे को किसी सिकती हुई
रोटी से आती है।"[5]

ग़ज़लकार ने सही लिखा है कि, "मुहब्बत में बहाए जाने वाले आँसू और हृदय विदारक आहों को कथ्य बनाने के बजाय पेट की उस आग को कथ्य बनाया गया है जो वर्तमान अर्थव्यवस्था में रोटी के लिए जूझते हुए सही इन्सान को, सिर से लेकर पैर तक जलाती जा रही है। इस समय जिस व्यवस्था के षामियाने तने हैं उनमें वह सामर्थ्य नहीं कि गर्मी और लू में झुलसते हुए इन्सान को आग हुई प्रखर सूर्य–किरणें और भी अधिक तेज होकर निकलती है और भी जलाती है। शामियाने हारे–थके आदमी की शरण हैं। मगर शरण ही जब छाप करने लगे तो किससे कहा जाए।"[6] भारत की आजादी के बाद रोटी, कपड़ा और मकान की समस्या दिन–ब–दिन गंभीर रूप धारण कर रही है।

आज के इस युग में आवास की समस्या गरीबी में पलने वाले ग्रामीण में ही नहीं बल्कि शहरों में भी यह समस्या और भी विकराल रूप में दिखाई देती हैं।

(ग) सुख और दुःख :

डॉ. कुँअर बेचैन ने अपनी ग़ज़लों में सुख और दुःख की अभिव्यक्ति की है। ग़ज़लकार का कहना है कि सुख हासिल करने के लिए अथक कोशिश जरूरी है। किसी भी व्यक्ति को दुःख पहुँचाकर सुख हासिल करना, यह मानवता नहीं है। सुख हासिल करने के लिए दूसरों को प्रेम देना उनके सुख हासिल करना यह मानवता नहीं है। सुख हासिल करने के लिए दूसरों को प्रेम देना उनके सुख–दुःखों में हिस्सा लेना, जिससे कि वो हमारा आदर करने लगे और आदर से अपने आपको झुका लें। आधुनिक युग में दूसरों को

Scanned with CamScanner

समझने की और सुख देने की भावना खत्म हो रही है। मनुष्य सुख की कीमत तब जानता है जब वो दुःख समझने के लिए अपना सुख दूसरों को दे देना होगा। इसके सन्दर्भ में ग़ज़लकार लिखते हैं कि–

"है फूल की तमन्ना तो न पत्थर को लगा हाथ।
झुक जाए अगर पेड़ की डाली तो झुका जो
एहसास तेरे दिल का, कहीं मर न गया हो
ये बात परखनी है अगर, दुःख की दवा ले।"[7]

आज भूतकाल में गुजरे हुए दुःख और परेशानी के क्षण मनुष्य के दिलो–दिमाग पर हमेशा कायम रहते हैं। हर कोई सुख का सपना देखता है, लेकिन वो सपने स्वार्थी लोग दुःख की आग में बदल देते हैं।

आज मानव जीवन दुःख और सुख से भरा हुआ है। वह गम से घबराकर अपने आपको, दुःखी कर लेता है। लेकिन यह गम उसे खुशियों के रास्ते पर चलने में मदद देता है। मानव जीवन सुख और दुःख का संगम है। दुःख के अंधेरे से सुख का उजाला आदमी के जीवन को नई जिन्दगी देता है। इसके संदर्भ में ग़ज़लकार लिखते हैं कि–

"गम से घबराकर न ऐसे मुस्कराना बन्द कर
सारी खुशियाँ है तेरी, आँसू बहाना बन्द कर।"[8]

हम कह सकते है कि, ग़ज़लकार ने अपनी ग़ज़लों में सुख–दुःख की स्थिति को व्यक्त किया हैं।

निष्कर्ष :

इस तरह डॉ. कुँअर बेचैन ने ग़ज़लों में व्याप्त सामाजिक संवेदना विभिन्न रूपों में अभिव्यक्त हुई है। सामाजिक जीवन–मूल्यों के बदलते हुए संदर्भ रोटी, कपड़ा और मकान, आम आदमी की पीड़ा और सुख–दुःख आदि सभी जीवन में बहुमुखी यथार्थ के रूप में कुँअर बेचैन के ग़ज़लों में ब–खूबी साकार हुए है। ग़ज़लकार कहीं सामाजिक बदलाव की निराशा के गहन अंधकार में डूबा हुआ है तो कहीं अनागत की सुखद कल्पनाओं में अपना आशावादी स्वर भी अभिव्यक्त करता है। डॉ. कुँअर बेचैन ने अपनी ग़ज़लों में जिस सामाजिक पीड़ा को उड़ेला है वह पीड़ा केवल कुँअर बेचैन की ही नहीं, अपितु हम सबकी पीड़ा है, हमारे समूचे समाज और देश की पीड़ा है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. साठोत्तरी हिंदी कविता की वस्तु चेतना – डॉ. बादामसिंह रावत पृ. 96–97
2. महावर इन्तजारों का – डॉ. कुँअर बेचैन, पृ. 56
3. तो सुबह हो – डॉ. कुँअर बेचैन, पृ. 32
4. नाव बनता हुआ कागज – डॉ. कुँअर बेचैन, पृ. 52
5. तो सुबह हो – डॉ. कुँअर बेचैन, पृ. 47
6. शामियाने काँच के – डॉ. कुँअर बेचैन, भूमिका से, पृ. 6–7
7. आँगन की अलगणी – डॉ. कुँअर बेचैन, पृ. 39
8. नाव बनता हुआ कागज – डॉ. कुँअर बेचैन, पृ. 64

शोध-पत्र लेखकों से विशेष

क्वाटरली इण्टरनेशनल रेफ्रीड रिसर्च जनरल में पेपर प्रकाशित कराने के लिए पाँच प्रमुख बातों का ध्यान रखना वहुत ही आवश्यक है-

(1) रिसर्च जनरल कम पत्रिका के क्रमानुसार चार पेज से कम नहीं होना चाहिए।
(2) रिसर्च जनरल में कम से कम आठ सन्दर्भ ग्रन्थ सूची (References) का होना आवश्यक है।
(3) रिसर्च जनरल में लेखक का नाम, पद, कालेज का पता, ऊपर अंकित होना चाहिए।
(4) नवीनतम एक पासपोर्ट साइज फोटोग्राफ एवं ई-मेल एड्रेस।
(5) रिसर्च जनरल में प्रमाण-पत्र हेतु आपके निवास का पता अंकित होना जरूरी है।

यह आप सभी के स्नेह का ही परिणाम है कि आपके प्रबुद्ध विचारों को **'अभिनव गवेषणा'** (क्वाटरली इण्टरनेशनल रेफ्रीड रिसर्च जनरल) के माध्यम से अपने पाठकों तक पहुँचाने का सुअवसर मिल रहा है। विस्तृत जानकारी हेतु कार्यालय अथवा मोबाइल पर सम्पर्क करें।

- सम्पादक

Scanned with CamScanner